नई दिल्ली
अंक – 145

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 34-35
अप्रैल : 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

8 अप्रैल 2016 चैत्र प्रतिपदा, गुढ़ी पाड़वा

गुरूबंधुभगिनियों से

आज ही के शुभ अवसर पर तेईस साल पहले यानी चैत्र प्रतिपदा 14 अप्रैल 1983 के दिन वंदनीय दादाजी ने श्री शक्तिपीठ की स्थापना गोवा में की। सैकड़ों सालों से चलती आई पूजन पद्धति एवं देव देवतार्जन के लिए स्थित्यंतर अवस्था सिद्ध करके दी, जिससे ईश्वरी शक्ति का, त्रिगुणात्मक शक्ति का लाभ पूरे जगत को आसानी से हो सके ऐसी सिद्धता वंदनीय दादाजी ने अथक प्रयत्नों से भूगर्भ में सिद्ध करके दी। इस शक्ति में देव देवताओं को भी समाया और प्रतिमाओं की सिद्धता कर इस शक्ति को आवाहन करके धारण करने का आसान तरीका सिद्धस्थ करके दिया। पुरातन काल में विश्व को संतुलित रखने का कार्य ऋषि मुनि, साधु संत पहाड़ों में जाकर, संन्यास लेकर तपःश्चर्या कर करते थे वही कार्य आज की बदली हुई परिस्थिति में, बदली हुई भौतिक अवस्था में सबके बीच रहकर इस कार्य के हर एक व्यक्ति को, हर एक साधक को करना है।

इस कार्य को सिद्ध करने के लिए विश्व की त्रिगुणात्मक शक्ति को सौम्य स्वरूप देना कोई मामूली बात नहीं थी। सैंकड़ों सालों में अनेक संत पुरूषों ने अवतार कार्य किया। त्रिगुणात्मक शक्ति को उन्होनें प्रखर तपश्चर्या करके धारण किया और इस प्रत्यक्ष अवस्था का अनुभव उन्होंने लिया। जगत में सुख–शांति–समाधान प्रस्थापित करने का महान कार्य किया

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

लेकिन उन्होंने अनुभव की हुई वह अध्यात्मिक उच्च अवस्था वे उनके भक्तगणों को नहीं दे सके क्योंकि उस त्रिगुणात्मक शक्ति में बदलाव करना, उसको सौम्य करना बड़ा कठिन काम था। यह अवस्था औरों को आसानी से देना यानी महाकारण दीक्षा है।

भौतिक जगत में जिस प्रकार बदलाव हो रहे थे, उसका लाभ मानव जाति को हो और इस जगत में सुख,शांति,समाधान, बना रहे इसलिए त्रिगुणात्मक शक्ति का आवाहन करके उसे सौम्य करना, उसे धरती में अधिष्ठित करना और लोगों को उसके साथ जोड़ देना (direct connect करना); जिसने किसी आसान साधन से (ॐकार साधना) मध्यस्थ के बिना (पुजारी, गुरुजी, आदि) मानव, उस शक्ति को आसानी से धारण कर प्रवाहित कर सके यह महान कार्य वंदनीय दादाजी ने परमपूज्य साईबाबा के कृपाशीर्वाद से सम्पन्न किया।

इस कार्य की तैयारी वंदनीय दादाजी के बचपन से ही शुरू हुई थी। जब विमोचन साधन सिद्ध होकर कार्यान्वित हो गए तब 1977 में वंदनीय दादाजी को कामकाज बंद कर आगे का कार्य हाथ में लेने के लिए परमपूज्य बाबा ने कहा।

वंदनीय दादाजी ने परमपूज्य बाबा से पूछा कि, विमोचनादि विधि होने के बाद भक्तभाविकों को कृपाशीर्वाद के स्वरूप में क्या दे सकते हैं, जिसका, इस जगत के अंत तक लय समाप्त नहीं होगा? परमपूज्य बाबा ने कहा, "इसके लिए एक ही माध्यम है – "ॐ"। अब तक जो पूजा पद्धति इस जगत में की गई उसके लिए मंत्र पठण, आहार, प्रत्याहार, यम–नियम आदि अनेक बंधन थे। आज के समय में एवं भविष्य में इस प्रकार के बंधन पालना नामुमकिन होगा, इसलिए भविष्य के लिए आसान साधन सिद्ध करना जरूरी है, जिसे आम लोगों को आचार–विचारों की बाधा न लग सके। ॐकार यही एक ऐसा साधन है। ॐकार तत्व विश्वमय है। इसका अस्तित्व विश्व की उत्पत्ति से है और विश्व का आस्तित्व ॐकार से है। वंदनीय दादाजी ने ॐकार सौम्य धारण करने का आरंभ श्री नरसोबा वाड़ी में 11 पूर्णिमा हवन विधि करके बारवा हवन महारूद्र स्वाहाकार 1979 जनवरी में किया। इससे उत्पत्ति तत्व की सिद्धता और धारणा वंदनीय दादाजी के माध्यम में हुई।

ॐकार का अगला तत्व यानी स्थिति, तत्व का आवाहन और धारणा कर, ॐकार भक्तों के जीवन में वलयरूप से धारण करने के लिए वंदनीय दादाजी को रत्नागिरी (शिखाव) के श्री गणेशजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

अब तीसरा तत्व – लय तत्व – यह प्रखर शक्ति श्री गोरक्षनाथ जी से प्राप्त करने का संकेत वंदनीय दादाजी को था। यह कठिन कार्य था और उसका संकेत वंदनीय दादाजी ने सातवे सेमिनार में भक्तों को दिया था कि, यह सिद्धता करते समय जान का खतरा होता है।

1983 मे श्री हाजी मलंग बाबा के उरूस के दौरान (End of January) इस शक्ति का आवाहन वंदनीय दादाजी ने किया। इस शक्ति का आवाहन वंदनीय दादाजी ने किया। तब खुद के माध्यम का शक्ति वलय भक्तों के माध्यमों में सवंमित करने के लिए सभी भक्तभाविकों को पंचमी के दिन बत्तीस शिराला (श्री गोरक्षनाथ जी के स्थान) बुलाया था। उसके पाँच दिन पहले

यानी माघ पूर्णिमा, श्री हाजीबाबा का उरूस था। उसके दो दिन बाद वंदनीय दादाजी के माध्यम पर शक्ति का आघात हुआ। उनको कराड़ मे आईसीयू में दाखिल (Admit) किया गया। डॉक्टर ने उसे हार्ट अटैक बताया लेकिन खुद भी परेशान थे क्योकि हार्ट अटैक में हार्ट ज्यादा से ज्यादा 3 मिनट बंद रहता है लेकिन वंदनीय दादाजी का हृदय एक घंटा पैतालिस मिनट बंद था। दूसरे दिन वंदनीय दादाजी ने बत्तीस शिराला का कार्यक्रम करना है, ऐसा मेसेज डॉक्टर के माध्यम से भक्तों को दिया। कुछ दिन बाद वंदनीय दादाजी का डिस्चार्ज देकर पूना में लाया गया। डॉक्टर ने 90 दिन का बेडरेस्ट बोला था। 15 दिन में आठवां सेमिनार था। वंदनीय दादाजी ने सेमिनार का schedule वैसे ही रखने के लिए कहकर उसका आरंभ भक्तभाविकों को करने के लिए कहा। तीन–चार दिन बाद जब वंदनीय दादा जी ने वंदनीय दीपक दादा को निकलने की (पूना से गोवा चलने की) तैयारी करने के लिए कहा, तबकी एक बात वंदनीय दादाजी ने आठवें सेमीनार में बताई। यह एक छोटा किस्सा है, जिससे हम काफी कुछ सीख सकते हैं। वंदनीय दादाजी ने खुद का बढप्पन तो कहीं भी नहीं बताया और न जताया और न ही पारिवारिक त्याग के बारे में भी कहीं बताया। इस छोटे से किस्से में पूज्यनीय वहिनी का (वंदनीय दादाजी की धर्म पत्नि) उल्लेख (जिक्र) किया गया; जो एक महान व्यक्ति है। इस छोटे से जिक्र के अलावा वंदनीय दादाजी ने उनका जिकर कहीं नहीं किया है। वंदनीय दादा और पूज्यनीय वहिनी का जीवन और त्याग हम शायद ही समझ सके। उनकी गुरु निष्ठा का यह छोटा सा किस्सा, वंदनीय दादाजी के शब्दों में,

अब हमारे व्याही (लड़की के ससुर), श्री कुरेशी, कराड़ से पूना आने के बाद मुझे मिलने आए और उन्होंने कहा, ''दादाजी, मैं आपके पास भीख माँगने के लिए आया हूँ।'' मैंने कहा, ''इतना क्या हुआ है?'' उन्होंने कहा, ''नहीं बस्। आप कहे तो, मैं जो माँगू, आप दे दोगे।'' मैंने कहा, ''मैं कौन होता हूँ कि, जो आप माँगते हो, वो देने वाला?क्योंकि, आपका मालिक जो है, वही मेरा भी मालिक है, और मेरा मालिक वही जो आपका मालिक। तो आप उसके पास माँग करो। क्योंकि, मैं भी उसी के पास ही माँगता हूँ। फर्क इतना है कि आपकी जुवां को वहा तक पहुँचने के लिए जरा देर लगेगी। मेरी जल्दी पहुँचेगी।

इस पर उन्होंने कहा, '' इस वक्त आप किसी भी सूरत के अंदर गोवा जाने का नहीं। और दो महीने तक आपको यहाँ पूना में आराम करना है।''

मैंने कहा, '' आराम ही है, तकलीफ, कहाँ है?'' मैंने फिर कहा, ''अब्बाजी, मेरे लिए जो प्यार और हमदर्दी आपने रखी है, उसके लिए मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ। लेकिन, ये जो आप कहते है कि, आप गोवा मत जाईये; ये किसी हालत में मैं मंजूर नहीं करूँगा।

इस पर उन्होंने कहा, ''देखो लाखो लोगों को आपकी जरूरत है, यह जरूर है। लेकिन आपको भी तो आपकी जरूरत है।''

मैंने कहा, ''जनम लेने के बाद मैंने मेरे लिए कुछ सोचा ही नहीं। घर में मेहमान आते हैं, तब उनके लिए मीठा खाना बनाया, तो अपने को भी मिल जाता है। ये हमारा सवाल है। यानी

दुनिया के लिए जब मैं माँगता हूँ तो मुझे मिल जाने वाला है। तो मैं भगवान के पास खुद के लिए क्यों माँगू? और एक बात अब्बाजी, आप सब तमाम जो मेरे भक्त है और मेरे लिए हमदर्दी रखते हैं, भगवान को मेरे लिए प्रार्थना कर सकते हैं, अर्ज कर सकते है, लेकिन उसके अलावा, और कोई भी मुझे बचा नहीं सकता। और जो मुझे बचाता है, उससे मुझे बचना ये बदनामी है। मैं उसकी पुकार आते ही, यहाँ से निकल जाऊँगा। तमाम दुनिया के अंदर भगवान के बहुत भक्त है। मैं भी एक भक्त हूँ। लेकिन मैंने भगवान की भक्ति जो की है, वो मतलब से नहीं की। भगवान ये दे, वो दे...। लेकिन मुझे कुछ ऐसा दे, जो मुझे दुनिया को देने को आये। मुझे अकेले को दिया तो तेरे को भगवान कौन कहेगा?''

अब इतना सब होने के बाद भी 'मैं' (वंदनीय दादा) नहीं मान रहा हूँ यह देखकर वे वंदनीय वहिनी को कहने लगे, ''आप तो दादाजी को मनाईये।'' तब वंदनीय वहिनी ने कहा, ''25 साल उनको मनाते–मनाते मैं थक गई। जिस वक्त मैं कहती हूँ, मत जाओ– तो वो पहले जाने वाले। और जब जाओ ऐसा कहा तो नहीं जायेंगे। ऐसा मेरा 25 साल के अंदर का तजुर्बा है। और जब बाबा का हुक्म होता है तो वो दुनिया को भी नहीं मानते। वो जाने वाले ही हैं।''

वंदनीय दादाजी ने आगे कहा, ''इसका मतलब यह है कि यकीन कितना होना चाहिए? जब आराम से रोटी मिलती है तब भगवान याद नहीं आता। तकलीफ और सूखी रोटी मिलती है, उस वक्त यह कहना चाहिए कि, ये भी तेरी रेहमत है। तो भगवान भी खुश हो जायेगा। तो किसी हालत में डरने का नहीं।''

आठवाँ सेमीनार 22 फरवरी 1983 में शुरू हुआ। सेमीनार के पाँचवे दिन वंदनीय दादाजी गोवा पहुँचे ओर आगे 5 दिन सेमीनार लिया। तब बताया कि शक्ति किस प्रकार संक्रमित की और फिर आगे चैत्र प्रतिपदा के शुभ दिन पर तीनों शक्तियों को श्री शक्तिपीठ में अधिष्ठित किया।

।। शुभं भवतु ।।

जनम जनम सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible